Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

स्वामी हरिदास का भारतीय संगीत को अवदान

डॉ0 रोमा अरोरा
एसोसिएट प्रोफेसर–संगीत गायन, राजा मोहन गर्ल्स पी0जी0 कालेज, अयोध्या,उत्तर प्रदेश।

शोध–सारांश– आध्यात्मिक संगीत साधना के क्षेत्र में भारतवर्ष के सन्तों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भगवद्भक्ति एवं संगीत का सम्बन्ध अनवरत रूप से वैदिककाल से चला आ रहा है। वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों एवं संतों में स्वामी हरिदास में इष्ट साधना हेतु संगीत को माध्यम बनाया। स्वामी हरिदास एक महान् कवि, संगीतकार एवं वाग्गेयकार के रूप में प्रसिद्ध थे। भक्ति, माधुर्य एवं संगीत का अनूठा समन्वय उनको कवियों में प्राप्त है। ब्रजभाषी स्वमी जी द्वारा वर्णित राग–रागिनियों में निबद्ध अनेक पद स्वामी हरिदास के ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। स्वामी हरिदास का सांगीतिक अवदान (योगदान) भारतीय संगीत की अमूल्य निधि के रूप में प्राप्त होता है।

बीज शब्द– उदात्त, परम्परानुमोदित, चतुर्विधि तथा लास्य, अवदान।

भारत देश आध्यात्म प्रधान देश है। अतः आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में संगीत का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। यह चेतना की धारा वैदिक युग से वर्तमान युग पर्यन्त चली आ रही है।

उत्तर मुस्लिम काल में भावनाओं और प्रवृत्तियों के परिवर्तन होने के कारण प्राग्वैदिक एवं वैदिक काल के संगीत में उपलब्ध भगवदाराधना के उदात्त और दिव्य भाव का ह्रास होने लगा था। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान धारा के प्रहरी साधु–सन्त और सन्यासियों ने यथार्थ रूपेण आत्म बलिदान करके धरोहरों की रक्षा की। किन्तु कुछ सामाजिक कारणवश विभिन्न संत सम्प्रदायों के संगीतकारों का क्रमब(इतिहास न बन सका। हिन्दू और मुसलमानों के साधकों के मिलन से, देश में धर्म की नई जागृति उत्पन्न हुई, जिनके व्याख्याता कबीर, दादू और नानक जैसे संत हुये।[1]

ईसा की चौदहवीं शताब्दी में अनेक ईश्वर भक्त संत–संगीतज्ञों ने जन्म लिया था। इस काल में भक्ति आन्दोलन अपने चरम उत्कर्ष पर था। इसी समय निर्गुण संत भक्ति, सूफी भक्ति, प्रेम लक्षणा कृष्ण–भक्ति तथा मर्यादा मार्गी–राम भक्ति की प्रेरणा से हिन्दी के सर्वोच्च साहित्य का निर्माण हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप शिल्प, संगीत तथा अन्य ललित कलाओं को भी पूर्ण विकसित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।[2] सगुण भक्ति की दो धारायें राम भक्ति तथा कृष्ण भक्ति और निर्गुण भक्ति की दो धारायें ज्ञान मार्गी तथा प्रेम मार्गी, इन चारो भक्तियों के संतों ने अपने धर्म प्रचारार्थ संगीत की राग–रागनियों का आश्रय लिया। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि जब भारतीय संगीत की पवित्रता और उसके आत्मिक सौन्दर्य को नष्ट करने के प्रयत्न हुये तभी उत्तरी भारत में भक्ति आन्दोलन का वेग बढ़ा।

भारतीय संगीत वैदिककाल से ही आध्यात्मिक धरातल पर आसीन रहा है क्योंकि योग की अपेक्षा संगीत को ब्रह्मचिन्तन का सुगम साधन स्वीकार किया गया है। अतः भगवत भक्ति और संगीत का सम्बन्ध अनवरत रूप से चला आ रहा है। ब्रज में स्थापित सभी वैष्णव सम्प्रदायों के आचार्यों ने भी भगवत् वन्दना के लिये संगीत का

आश्रय लिया और अपने पदों को राग–रागिनी तथा शास्त्रीय संगीत की गेय–विधाओं से ब(करके संगीत को इष्ट की उपासना का सुदृढ़ माध्यम बनाया। इस दृष्टि से स्वामी हरिदास की वाणियाँ भी अपवाद नहीं है।

आचार्य शारंगदेव का कथन है कि 'गीत' धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष चारो का साधन है।[3]

यह सत्य भी है कि संगीत, साधन की रुचि के अनुसार विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति कराता है। संगीत का एक वर्ग यह है, जो नाद को साधन मात्र नहीं साध्य भी मानता है। उसके लिए नाद ही ब्रह्म है, जिसकी उपासना करने से समस्त देवताओं की उपासना स्वयं ही हो जाती है। परन्तु एक वह भी है जिसकी दृष्टि से संगीत क्षणिक सांसारिक कामनाओं को उपलब्ध करने का साधन मात्र है।

भक्त कवि संगीतज्ञों ने शासकों का आश्रय नहीं लिया लेकिन उनके योगदान अविस्मरणीय हैं। भक्त कवियों ने आध्यात्मिकता और धार्मिकता के आवरण में संगीत को लपेट दिया। फलस्वरूप संगीत का स्वरूप और अधिक निखर गया।

रसिक शिरोमणि स्वामी श्रीहरिदास तथा अन्य संत गायक प्रथमवर्ग में आते हैं और या अन्य दरबारी गायक की गणना दूसरे वर्ग में होती है। वृन्दावनवासी स्वामी हरिदास जी का जन्म 1480 ई0 में स्वामी आशुधीर जी के पुत्र के रूप में हुआ था। यह एक सारस्वत ब्राह्मण वंश में जन्मे थे। 'निजमत सि(ान्त' के अनुसार इनका जन्मस्थान राजपुर था, किन्तु अधिकांश विद्वान इनका जन्मस्थान ;अलीगढ़द्ध 'कोयल' या 'कोल' नामक ग्राम बताते हैं। स्वामी जी के जीवनकाल में ही इस ग्राम का नाम हरिदास हो गया जो आज भी इसी रूप में विख्यात है। स्वामीजी की शिक्षा के विषय में कोई प्रमाण नहीं मिलता किन्तु उनके पिता श्री आशुधीर जी स्वयं एक विद्वान एवं पहुँचे हुए संत थे। स्वामी हरिदास जी की आरम्भिक शिक्षा अपने पिता के ही चरणों में हुई। स्वामी हरिदास जी की काव्य रचनाओं से स्पष्ट होता है कि उन्हें दर्शन एवं साहित्य की शब्दावली का पर्याप्त ज्ञान था। स्वामी हरिदास जी जिस शिक्षा से सर्वोपरि सि(हुए, वह थी उनकी संगीत विद्या। यह उनके कवि पिता का प्रभाव था। वृन्दावन आगमन के पश्चात् स्वामी जी ने अपने उपास्य रस का प्रवर्तन किया और वे सि(आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए। युगल नाम का जप और राग द्वारा कुंजबिहारी का गान, उनकी सेवा थी। यह भावना किसी अन्य भक्त कवि में नहीं मिलती।[4] स्वामी हरिदास को एक महान कवि, संगीतकार व वाग्गेयकार के रूप में मान्यता मिली है। अतः भक्ति, माधुर्य व संगीत का अनूठा समन्वय उनकी वाणियों में प्राप्त होता है। स्वामी जी की सम्पूर्ण रचना केवल 128 पदों में ही सीमित है, मूलतः उनकी भाषा ब्रजभाषा है। इसी भाषा में उन्होंने अपनी अनुभूतियों को काव्य परिधान में सुसज्जित कर संगीत शास्त्र में वर्णित प(ति के अनुसार विविध राग–रागनियों में अपने पदों को बाँधकर, अपने उपासक परक श्यामा–कुंजबिहारी के समक्ष गान किया।[5]

श्रीहरिराम व्यास ने स्वामी हरिदास के गायन की प्रशंसाकरते हुए कहा है– **"राग सहित हरिदास रस नदी बही न थहात्"** स्वामी जी की संगीत विषयक उत्कृष्टता का वर्णन करते हुए नाभादास ने कहा है– **"गान कला गन्धर्व स्याम स्यामा को तोषै।"**

स्वामी हरिदास जी का प्रमुख उद्देश्य संगीत के माध्यम से अनन्त की अनन्त साधना करना था। इसी अनन्यता के परिपाक हेतु स्वामी जी की साधना से संगीत का सुन्दर समन्वय देखा जाता है। स्वामी जी की रचनाओं में अट्ठारह पदों का संग्रह **"अष्टादश सिद्धान्त के पद"** मिलता है। जिसमें राग आसावरी, बिलावल, कल्याण और विभास का उल्लेख मिलता है। एक सौ दस रस के पदों का संग्रह **'केलिमाल'** जिसको कान्हड़ा, केदार, नट, कल्याण, बसन्त, मलार, सुघरई, सारंग, गौरी, बिलावल आदि रागों में रखा गया है। इन पदों से स्वामीजी की प्रभु के प्रति गहन, आसक्ति, तन्मयता दृष्टिगोचर होती है। अतः स्पष्ट होता है कि स्वामी जी का काव्य पूर्णतया संगीतमय है। उसमें संगीत तत्व का गम्भीर स्वरूप मिलता है। स्वामी जी ने अपने पदों में संगीत की तीनों प(तियों का संगम किया है– **"नृत्य–गीत–ताल भेदनि के विभेद न जाने।"**[6] स्वामी जी ने दिन के भिन्न–भिन्न समयों, और वर्ष की विविध ऋतुओं में शास्त्रीय प(ति के अनुसार ही अपने पदों को विविध राग–रागनियों में बाँधा है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसके लिए उन्हें यत्न नहीं करना पड़ता था बल्कि स्वतः ही हृदय से स्फुरित होकर अपने सहज रूप में स्वर–ताल तथा लय से आबद्ध होकर उनके काव्य में परिणित हो

जाता था। उनके पदों द्वारा निश्चय ही पारलौकिक उन्नति एवं परम रस की प्राप्ति होती है। संगीतात्मकता की इस सि(का यही वास्तविक रहस्य है।

प्रारम्भ से अंत तक प्रत्येक पद में स्वामी हरिदास के भाव बदलते रहते हैं, क्योंकि उनके भाव लोक के अधिष्ठाता श्यामा–कुंज बिहारी उन्हें हर पल अलग–अलग छवि में विचरण करते दिखाई देते हैं, इसलिए उनमें केलि क्रीड़ाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अपनी वाणी में उन्होंने राग एवं रस की रंजकता को अत्यधिक सूक्ष्म रूप से निखारा हैऋ जैसे प्रातःकालीन गेय राग विभास में, भोर के आलस्य से शिथिल श्यामा–श्याम की क्रीड़ा का वर्णन, रस–भाव तथा समय के अनुकूल है–

आलस भीजैरी नैन जँभाति आछी भाँति सुदेस।[7]

एक अन्य पद में **"राग मलार जम्यौ री किसोर–किसोरिनी"** कहकर राग मलार का वर्णन तथा **"नृत्तत जुगल किसोर जुवति जन मन मिलि राग केदारौ मच्चौ"** कहकर राग केदार का उल्लेख किया है। इसी प्रकार बसंत राग द्वारा सुहानी ऋतु की सार्थकता भी सि(की है–

अबके बसन्त न्यारेई खेलैं।
काहू सो न मिली खेलै रही तेरी सौं।। केलिमाल पद सं0 101

× × × × ×

गुड़ गड़वा जीवन मौर।

स्वामी हरिदास के पदों में गायन ही नहीं वरन् परम्पदानुमोदित चतुर्विधि वाद्यों का भी उल्लेख किया है–

बजत ताल, रबाब और बहु
तरनि तनैया कूलहु। वही पद सं0 48

× × × × ×

चरन चरन पर मुरली अधर धरै। पद सं0 15

× × × × ×

मेघ मृदंग बजावत बन्धान गन्धौ। पद सं0 61

× × × × ×

काहू के हाथ अधौटी, काहू के बीन, पद सं0 61
काहू के मृदंग, कोऊ गहै तार,

× × × × ×

आवत जात बजावत नूपुर। पद सं0 08

गायन वादन के साथ नृत्य–सम्बन्धी अनेक परिभाषित शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि उन्हें नृत्य का भी पूरा ज्ञान था। शंकर के ताण्डव–लास्य एवं ताता थेई बोलो से नृत्य के प्रकार का सहज उल्लेख प्राप्त होता है।

"औधर ताल धरै श्री श्यामा,
ताताथेई, ताताथेई बोलत संग पी के।
तांडव–लास और अंग को गनै,
जै रुचि उपजाति जी के।"

संगीत के त्रिविध स्वरूप गायन–वादन और नृत्य में स्वामी जी की पैठ सूक्ष्मतम कही जा सकती है। वे महान संगीतज्ञ थे, युग प्रवर्तक के रूप में संगीत के क्षेत्र में, रास–मंच के पुनर्गठन में उन्हें रास–संगीत का पुरोधा माना जा सकता है।

स्वामी जी के पदों का गहराई से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने संगीत के समस्त सैद्धान्तिक तथ्यों को भी आत्मसात किया था, जिसका स्पष्ट प्रमाण हमें उनके पदों में से ही प्राप्त होता है–

श्रुति धुरि राग केदार जम्यौ। केलिमाल पद संख्या–32

× × × × ×

कोकिला अलापत सुर देत पंछी राग बन्यौ पद सं0 14

तीनों सुर के तान बंधान। पद सं0 67

× × × × ×

राग–रागिनी तार मन्दर सुर घोर। पद सं0 65

राग–रागिनीन के जथ उपजावत,

राग–रागिनी अलौकिक उपजत। पद सं0 12

निष्कर्षतः स्वामी जी के पदों में संगीतात्मकता उनकी निजी सम्पत्ति है। यद्यपि उनके पदों की स्वरात्मक संरचना के विषय में कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं होती तथापि स्वामी हरिदास द्वारा वर्णित पदों में संगीतात्मक सामग्री की सार्थकता और उसका पदों में वर्णित प्रसंग से सामंजस्य इस बात को दर्शाता है कि स्वामी जी को राग–रागनियों के स्वरूप तथा उनके समय एवं)तु सि(ान्त का, तालों का, विशिष्ट वाद्यों का और उनकी प्रकृति और अवसर के अनुकूल प्रयोग, आवश्यक श्रृंगारिक सज्जा का भी उन्हें पूर्ण ज्ञान था। तात्पर्य यह है कि उन्हें संगीत के पक्षों का पूर्ण ज्ञान था उनकी इस विशिष्टता के कारण आज भी सच्चा संगीतज्ञ स्वयं को किसी न किसी रूप में स्वामी जी से जुड़ा हुआ पाता है।

स्वामी हरिदास जी के अनेक शिष्य थे किन्तु 'नाद विनोद' में मुख्यतः 8 ऐसे शिष्यों की चर्चा मिलती है जो संगीताकाश में आज भी चमक रहे हैं जिनमें तानसेन, बैजू, गोपाल लाल, मदन राय, रामदास, दिवाकर पंडित, सोमनाथ और सुरसेन प्रमुख हैं। तानसेन रीवा दरबार के उपरान्त अकबर दरबार में आश्रित थे। बैजू गुजरात के उपरान्त राजा मानसिंह ;ग्वालियरद्ध के आश्रित थे। मदनराय व रामदास दिल्ली प्रयाण कर गये, सोमनाथ व सुरसेन पंजाब के निवासी हो गये, गोपाल लाल गायक के रूप में कश्मीर दरबार में आश्रित रहे। इन सभी शिष्यों में ध्रुपद, धमार, तराना, त्रिवट, रागमालिका, चतुरंग के अतिरिक्त नये–नये रागों की भी रचना कर संगीत जगत को विशेष अवदान प्रदान किया।[8]

सन्दर्भ–सूची

1. असित कुमार बनर्जी, हिन्दुस्तानी संगीत–परिवर्तन शीलता, पृ0 46
2. लक्ष्मी नारायण गर्ग, निबंध संगीत, पृ0 539
3. आ0 वृहस्पति, संगीत चिंतामणि प्रथम खण्ड, पृ0 312
4. ललित बिहारी गोस्वामी, बृज भारती–स्वामी हरिदास जी का जीवन वृत्त, पृ0 49
5. सुमनलता वोहरा, संगीत, मई–1991 हरिदास के सांगीतिक पक्ष पर शोधात्मक दृष्टि, पृ0 03
6. डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, हरिदास रस सार : केलिमाल पद सं0 6 (प्राप्त ब्रज भारती, पृ0 61, हरिदास अगंक–1)
7. केलिमाल, पद सं0 77 (संगीत मई 1991, सुमनलता वोहरा, पृ0 4)
8. Susheela Mishra, Great Masters of Hindustani Music, p. 19